संगम पर ब्राह्मण किस को कम्बाइन्ड (Combined) करते है

1 आज–कल की दुनिया में धर्म और कर्म – दोनों ही विशेष गाये जाते हैं। धर्म और कर्म – ये दोनों ही आवश्यक हैं। लेकिन आजकल धर्म वाले अलग, कर्म वाले अलग हो गये हैं।

2 कर्म वाले कहते हैं कि धर्म की बातें नहीं करो, कर्म करो और धर्म वाले कहते हैं कि हम तो हैं ही कर्म–सन्यासी।

लेकिन संगम पर ब्राह्मण 'धर्म और कर्म' को कम्बाइन (Combined) करते हैं।

03.02.76

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

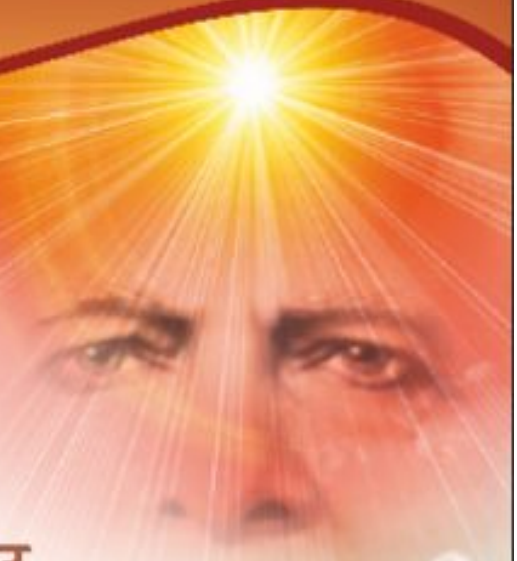

प्रश्न : मीठे बाबा, आप के अनुसार संगमयुग विशेष युग क्यों है

उत्तर : मीठे बच्चे, संगमयुग विशेष युग है क्योंकि

1. संगम पर असम्भव बात ही सम्भव हो जाती है। यहाँ एक ही समय में दोनों बातें साथ-साथ हैं।

2. तो संगमयुग विशेष युग है। इसलिए विशेष है, क्योंकि जो-जो विशेषताएं और युगों में नहीं हो सकतीं, वह सब विशेषताएं संगम पर होती हैं।

3. इसलिए इसको 'विशेष-युग' कहते हैं। तो जो इस बात के कम्बाइन्ड रूप में अभ्यासी हैं

4. वही कम्बाइन्ड रूप संगम का - बाप और बच्चा और प्रारब्ध का - श्री लक्ष्मी और श्री नारायण - इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप के अनुभवी बन सकते हैं व अधिकारी बन सकते हैं।

03.02.76

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

मीठे बाबा,महारथियों के महान् स्थिति की विशेष निशानी, जिससे स्पष्ट हो जाये कि यह महारथी-पन का पुरूषार्थ है, वह क्या होगी?

बापदादा :-

मीठे बच्चे,

❶ एक तो महान् पुरुषार्थी अर्थात् महारथी जो भी दृश्य देखेंगे, वह समझेंगे - ड्रामा प्लैन अनुसार अनेक बार का अब फिर से रिपीट हो रहा है, वह 'नथिंग-न्यू' लगेगा।

❷ कोई नई बात अनुभव नहीं होगी जिसमें 'क्यों' और 'क्या' का क्वेश्चन उठे।

❸ और, दूसरा - ऐसे अनुभव होगा जैसे प्रैक्टिकल में, स्मृति-स्वरूप में अनेक बार देखी हुई सीन अब सिर्फ निमित्त मात्र रिपीट कर रहे हैं।

03.02.76

3-2-76
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

संगमपर ब्राह्मण किसको कम्बाइंड करते है?

1) आज-कल की दुनिया मे धर्म व कर्म - दोनों ही विशेष माने जाते है धर्म और कर्म - ये दोनो आवश्यक है लेकिन आजकल धर्म वाले अलग, कर्मवाले ~~अलग~~ अलग हो गये है।

2) कर्मवाले कहते है की धर्म ~~की~~ की बाते नही करो, कर्म करो और धर्म वाले कहते है की हम तो है ही → कर्म - संन्यासी
लेकिन संगम पर ब्राह्मण धर्म और कर्म को कम्बाइन्ड करते है

03-02-76 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं धर्म और कर्म को कम्बाइन्ड करने वाली ब्राह्मण आत्मा हूँ।

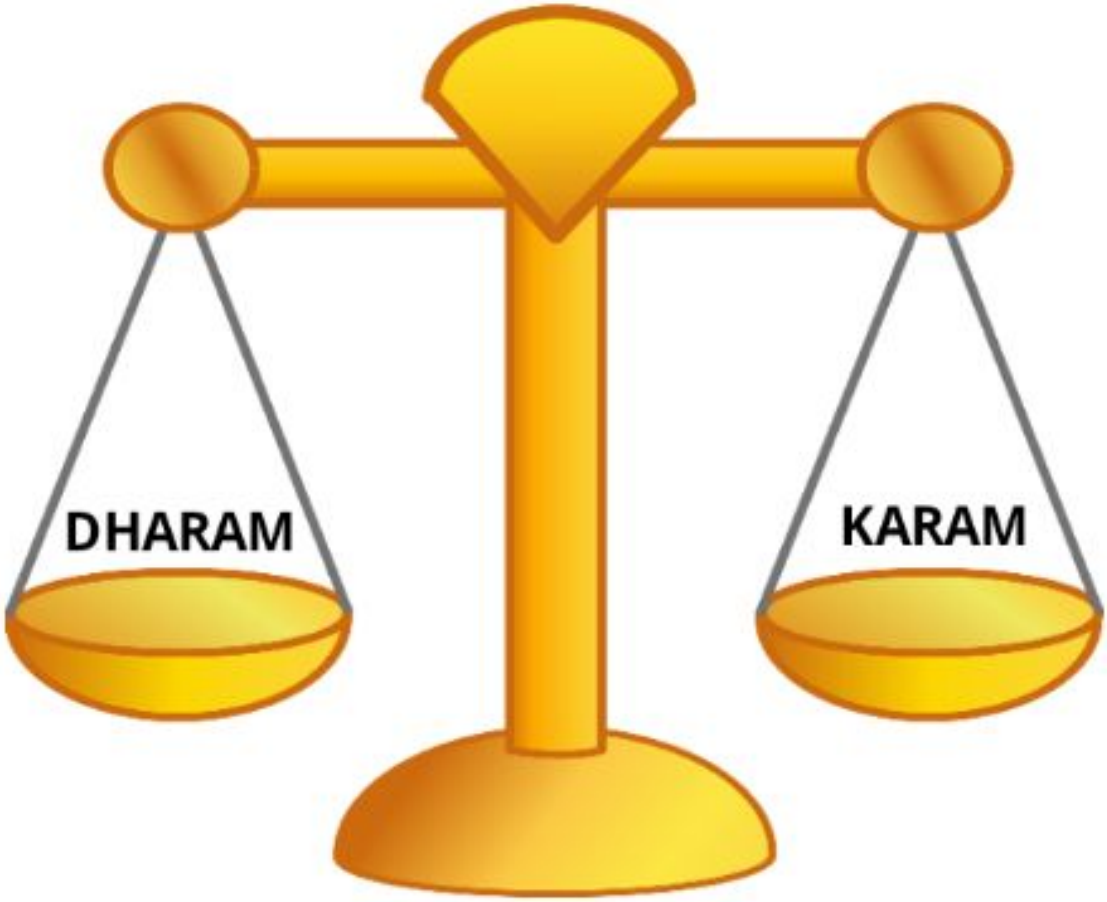

धर्म और कर्म को कम्बाइन्ड करने वाली ब्राह्मण अर्थात् असम्भव बात को सम्भव करने वाली। एक ही समय पर धर्म और कर्म दोनों को साथ-साथ करने के अभ्यासी।

03-02-76

धर्म और कर्म का कम्बाइन्ड रूप

1 साक्षीपन
2 त्रिकालदर्शी

यह दोनो स्टेज महा-रथियों की होने के कारण कल्प पहले की स्मृति बिल्कुल फ्रेश व ताजी रहेगी।

1. यहाँ एक ही समय में दोनों बातें साथ-साथ हैं। 'धर्म भी हो और कर्म भी हो'- इसका ही अभ्यास सिखलाते हैं। तो संगमयुग विशेष युग है। 2. वही कम्बाइड रूप संगम का- बाप और बच्चे और प्रारब्ध का- श्री लक्ष्मी और श्री नारायण इन दोनों के कम्बाइन्ड रूप के अनुभवी बन सकते हैं।

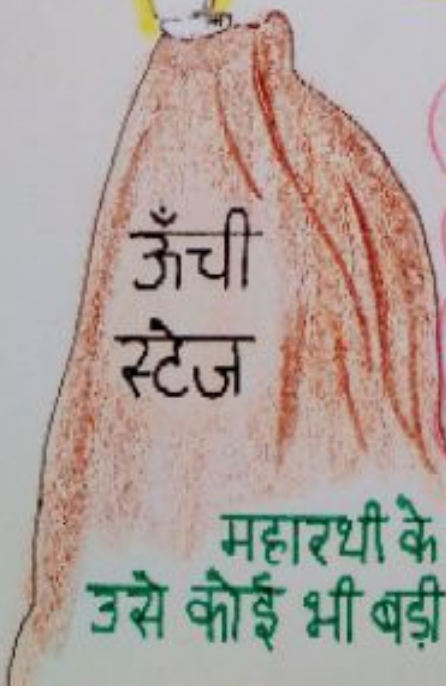

कोई भी कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊँची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी।

संगमयुग

महारथी के महान पुरूषार्थ के सामने उसे कोई भी बड़ी बात बड़ी अनुभव नही होगी।